# AFFORDABLE TREATEMENT FOR DIVYANG



डॉ.राहुल पड़वाल एवं ब्लाईंड वेलफेयर सोसायटी मानवता की मिसाल बने

## बालिका को गर्भाशय की गठान का हुआ निदान...नवजीवन मिला

मेघनगर। गुजरात के दाहोद शहर के प्रसिद्ध चिकित्सक डा. राहुल पड़वाल चिकित्सा जगत में एक ऐसा नाम है जो दिव्यांग महिलाओं के लिये आसमां से उतरे भगवान का रूप है । वर्ल्ड बर्थ डिफेक्ट डे पर आज ऐसे व्यक्तित्व का उल्लेख करना प्रासंगिक है । डॉ. राहुल पड़वाल अपने चिकित्सकीय पेशे में व्यस्ततम समय के बाद भी समाज के गरीब पीड़ित असहाय एवं बीमारी के कारण घर परिवार से त्याग दिये गए उन मरीजों को निश्शुल्क उपचार देने वाले सहृदय व्यक्तित्व नहीं एक संस्था बन चुके है। वर्ल्ड बर्थ डिफेक्ट डे पर हम एसे चिकित्सक का भी उल्लेख करते है जिन्होंने अपनी शिक्षा को सिर्फ कमाने का साधन नहीं वरन दीन- दुखियो के दर्द को मिटाने के लिये भी समर्पित की है।

कई जटिल ऑपरेशन को अपने कुशल हाथों से सहज एवं सरल बना कर सफलता प्राप्त करने वाले डॉ राहुल पड़वाल इन्डियन बुक ऑफ रिकार्ड,एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड के साथ कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित किये जा चुके है।

हम चर्चा कर रहे है एक ऐसी दिव्यांग बीस वर्षीय बालिका की जो नब्बे प्रतिशत दिव्यांग थी । जिसे खाने पीने तो ठीक मल -मूत्र त्याग की भी समझ नहीं थी । इन सबके साथ उसे गर्भाशय में गांठ होने से मासिक के समय अत्यधिक पीड़ा थी । इतनी दयनीय स्थिति के बाद उस बालिका का दुर्भाग्य ऐसा कि परिवार मे उसकी माता भी बचपन में कैंसर जैसी बीमारी से चल बसी। परिवारजन ने संभवतः बालिका के इलाज का प्रयत्न किया लेकिन असफलता मिली तथा एसी स्थिति में उसे घर पर रखना संभव नहीं होने पर ब्लाइंड वेलफेयर संस्था में भर्ती किया । एसे समय मे उसे आश्रय देने वाले ब्लाईंड वेलफेयर संस्था ने उसे परिवार के सदस्य की तरह कर्तव्य निभाते हुए कई जगह इलाज करवाया । स्थिति की गंभीरता को देखते हुए कोई भी अस्पताल एवं डॉक्टर उसे देखने को तैयार नहीं हुए । सभी जगह निराशा मिली ..... पीड़ा बढ़ती गई। बालिका दर्द से तड़पती रहती .... संस्था के सदस्य भी आँखों में आँसू लिये मजबूर थे . . . मन मसोस कर ईश्वर से प्रार्थना करते कि ऐसा दु:ख किसी को नहीं मिले ।

एक दिन ब्लाईंड वेलफेयर संस्था के पदाधिकारियों की आँखे चमक उठी .....आशा की किरण के रुप में डा . राहुल पड़वाल का नाम किसी ने बताया । यह नाम ही उस पीड़ित बालिका के इलाज के लिये नवजीवन का संचार करने जैसा था । डॉ . राहुल पड़वाल के नाम के प्रस्ताव के बाद संस्था के पदाधिकारियों ने जब उनसे सम्पर्क किया एवं ऑपरेशन के खर्च की जानकारी ली तो फिर एक बार खुशियो पर बादल छा गये । बिना टांके के आपरेशन का खर्च अधिक था पदाधिकारी एक दूसरे को देखने लगे तभी डा. पड़वाल समझ गये कि आर्थिक परेशानी है तो एसे में उन्होंने निश्शुल्क ऑपरेशन करने की घोषणा की तथा तुरंत बालिका को भर्ती करके सभी आवश्यक जाँच करके अत्याधुनिक पद्धति से आपरेशन की तैयारी की। बालिका की मानसिक स्थिति को देखते हुए डा . पड़वाल ने बिना टाँके का आपरेशन करने का निर्णय लिया । अपने अस्पताल के सभी सामान्य कार्यों को रोक कर तुरंत यह जटिलतम ऑपरेशन किया । बालिका के स्वास्थ्य सुधार होने तक अस्पताल में रखा । छुट्टी के बाद बालिका जब ब्लाईंड वेलफेयर संस्था में पहुँची तो वहाँ के छोटे छोटे दिव्यांग बच्चों ने खुशियाँ मनाई । यह बात जब पिता को पता चली तो बच्ची को देखकर खुशी से नाच उठे । कुछ दिनों के बाद बच्ची को वेलफेयर संस्था से बालिका को अपने पिता घर ले जायेंगे। ऐसी भावना से मानवता की सेवा करने वाले चिकित्सक को वर्ल्ड बर्थ डिफेक्ट डे पर वंदन नमन ..... ।

पत्रिका सिटी कम्युनिटी & कल्चर 04

गंभीर बीमारी से जूझ रही दिव्यांग बच्ची का सहारा बना चिकित्सक

आसान कर दी मुश्किल

धर्म स्थलों की संस्कृति को उजागर कर रही है राज्य सरकार : डिंडोर

अंबाजी में दान से छलका माता का भंडार